Subject :- Sociology Date :- 28/05/2020
Class :- D-I (H) & XI^th Paper :- 1st & Subsidiary
Topic :- समिति - संस्था में तथा समिति - समाज में अन्तर

By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher Marwari college, Darbhanga

Online Study Material No :- (91)

समिति (Association)

* यह व्यक्तियों का एक संगठित समूह है।
* यह व्यक्तियों के समूह के रूप में होने के कारण इसे देखा जा सकता है, अतः यह मूर्त है।
* इसकी स्थापना की जाती है। यह बतलाना है कि किस समिति की स्थापना किसने की
* यह अस्थायी होती है।
* इसका अपना एक नाम होता है।
* यह व्यक्तिगत हित या कल्याण पर जोर देती है।
* इसके कुछ औपचारिक नियम होते है, जो साधारणतः लिखित रूप में होते है।
* इसकी नियंत्रण-शक्ति अपेक्षाकृत कमजोर या शिथिल होती है।
* यह विशेष हितों या उद्देश्यों की पूर्ति करती है।
* इसके हितों की पूर्ति के लिए किसी न किसी संस्था का होना आवश्यक है।
* यह हस्तांतरित नही होती है।
* मनुष्य इसके सदस्य होते हैं।

संस्था (Institution)

* यह नियमों, विधि-विधानों और कार्य-प्रणाली की एक व्यवस्था है।
* यह अमूर्त है, क्योंकि यह नियमों कार्य-प्रणाली आदि की व्यवस्था है जिसे देखा नही जा सकता।
* स्वतः विकास होता है, इसलिए यह नही कहा जासकता कि इसकी कब, कैसे और कहाँ उत्पत्ति हुयी।
* यह अपेक्षाकृत स्थायी होती है।
* इसका अपना एक प्रतीक होता है जैसे - चर्च का प्रतीक क्रॉस तथा किसी शिक्षण-संस्था का जलती हुयी मशाल।
* यह सामूहिक कल्याण पर जोर देता है।
* इसके अलिखित - अनौपचारिक नियम - जनरीतियों, प्रथाओं, परम्पराओं और रूढ़ियों के रूप में होते है।
* इसके नियंत्रण-शक्ति अधिक होती है।
* यह मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति में योग देती है।
* यह विभिन्न समितियों के हितों की पूर्ति में साधनका कार्य करती
* यह हस्तांतरित के साथ-साथ मनुष्य इसके सदस्य नहीं हो सकता है।

Scanned with CamScanner

समिति (Association)

* यह व्यक्तियों का एक समूह है।
* यह व्यक्तियों का समूह होने के कारण यह मूर्त है।
* इसका निर्माण समाज के अस्तित्व के आने के बहुत बाद की घटना है।
* इसकी सदस्यता ऐच्छिक होती है।
* यह अस्थायी संगठन है।
* इसकी स्थापना निश्चित उद्देश्यों को लेकर जान-बूझकर की जाती है।
* यह सहयोग की भावना पर आधारित होती है।
* व्यक्ति एक-साथ कई समितियों की सदस्यता ग्रहण कर सकता है।

समाज (Society)

* यह सामाजिक सम्बन्धों का जाल है।
* सामाजिक सम्बन्धों का जाल होने के कारण यह अमूर्त है।
* इसका अस्तित्व किसी न किसी रूप में सदैव रहा है, उस समय भी जब मानव असभ्यता व बर्बरता के युग में था।
* व्यक्ति का जीवन अनिवार्यतः समाज में ही बीतता है और इसी कारण उसे एक सामाजिक प्राणी माना गया है। समाज से पृथक व्यक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती।
* यह एक स्थायी अवस्था है।
* इसका विकास स्वतः धीरे-धीरे होता है।
* इसमें सहयोग के साथ-साथ संघर्ष भी होता है।
* व्यक्ति एक समय में एक समाज से ही सम्बन्धित हो सकता है।

S.N. Choudhary
Marwari college
L.N.M.U

Scanned with CamScanner